

# भीतरी लेन के धावक रहते हैं लाभ में!

शोधकर्ता बता रहे हैं कि ओलम्पिक या अन्य प्रतियोगिताओं में वर्तमान में उपयोग किया जा रहा स्टार्टगन सिस्टम सबसे अंदर वाली लेन में खड़े धावक को अतिरिक्त लाभ देता है।

**दौड़** के खेल में हमेशा से मानना रहा है कि जो सबसे तेज़ भागेगा, वही जीतेगा। लेकिन ज़रूरी नहीं कि यह बात हमेशा सही हो। हम जानते हैं कि जब ओलम्पिक जैसे आयोजन होते हैं तो प्रथम, द्वितीय, तृतीय और कोई पदक न प्राप्त कर सकने वाले चतुर्थ स्थान प्राप्त प्रतिभागी द्वारा लिए गए समय में सेकण्ड के एक मामूली हिस्से का ही फर्क होता है। इस अंतर के लिए गति के अतिरिक्त कई कारक ज़िम्मेदार हैं - जैसे, स्टार्टगन सिस्टम की संरचना।

दौड़ शुरू करने के लिए बंदूक दागी जाती है। इसे स्टार्टगन कहते हैं। ओलम्पिक या अन्य प्रतियोगिताओं में वर्तमान में उपयोग किया जा रहा स्टार्टगन सिस्टम सबसे अंदर वाली लेन में खड़े धावक को अतिरिक्त लाभ देता है। क्योंकि सबसे आंतरिक लेन का धावक बंदूक की आवाज़ बाहरी लेन के धावक के मुकाबले पहले और अधिक तेज़ी से सुन पाता है जिससे वह अपनी दौड़ कुछ जल्दी प्रारम्भ कर लेता है। एथलेटिक्स अधिकारी भी इस अंतर के बारे में वर्षों से जानते हैं। यह अंतर अधिक प्रभावी तब हो जाता है जब दौड़ 400 मीटर या उससे कम की हो जिसमें शुरुआत में ही आगे-पीछे होने या पिछड़ने की संभावना होती है। बड़े-बड़े आयोजनों में इस समस्या को खत्म करने के लिए लाउडस्पीकर के ज़रिए स्टार्ट टोन का सहारा लिया जा सकता है। ये स्पीकर प्रत्येक लेन पर लगाए जाते हैं। इस प्रकार सभी को सिग्नल एक ही समय पर सुनाई पड़ता है। विशेषकर बड़े आयोजनों में तो इसका उपयोग किया ही जा सकता है जिसमें गन शांत रहे और स्पीकर सिग्नल पहुंचाए। बहरहाल ओलम्पिक में तो लाउड गन का ही उपयोग किया गया जाता रहा है।

यही कारण है कि अटलांटा ओलम्पिक 1996 और एथेन्स ओलम्पिक 2004 में हुई रेस में बाहरी लेन के धावकों ने भीतरी लेन के धावकों की तुलना में धीमा स्टार्ट

लिया था।

इस समस्या पर पिछले 3 वर्षों से काम कर रहे इण्डियाना युनिवर्सिटी, ब्लूमिंगटन के जेसस डेपेना का कहना है कि यदि प्रत्येक धावक तक सिग्नल पहुंचने के समय में अंतर होगा तो उनकी व्यक्तिगत प्रतिक्रिया पर भी असर पड़ेगा। एक अध्ययन के दौरान उन्होंने पाया था कि आठवीं लेन में गन की आवाज़ सबसे अंदर की लेन की तुलना में 150 मिली सेकण्ड देर से पहुंची, इससे उस धावक की प्रतिक्रिया में भी देरी हुई जो फिनिश लाइन तक पहुंचने में पूरे 1 मीटर का अंतर पैदा कर सकती है। फिनिश लाइन पर पहुंचने में 1 मीटर का अंतर सिल्वर को गोल्ड और गोल्ड को सिल्वर में बदल सकता है।

दूसरा पहलू गन की आवाज़ का है। युनिवर्सिटी ऑफ अलबर्टा, कनाडा के डेविड कॉलिन्स और उनके सहयोगियों ने इस पहलू का अध्ययन किया और पाया कि प्रशिक्षित धावक भी 80 डेसिबल की तुलना में 120 डेसिबल की आवाज़ के प्रति 18 मिली सेकण्ड पहले प्रतिक्रिया देता है। आंतरिक लेन पर खड़े एथलीट को गन की सबसे तेज़ आवाज़ सुनाई देगी इस प्रकार तेज़ आवाज़ धावक को अधिक तेज़ शुरुआत दे सकती है।

अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स फेडरेशन के टेक्निकल मैनेजर आईमर मटराजी का कहना है कि ओलम्पिक अधिकारियों को भी इस बात का अंदाज़ा है कि अंतिम या दूरस्थ लेन के धावक को धीमी शुरुआत करनी पड़ती है और अंतर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स फेडरेशन भी इसके लिए नई तकनीक के विकास में प्रयासरत हैं ताकि समस्या का समाधान हो सके। लेकिन अभी इसकी इतनी आवश्यकता नहीं देखी जा रही है।  
(स्रोत फीचर्स)

